INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 1 | FEBRUARY - 2023

विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की कार्यशैली का अध्यापन अनुभव के आधार पर अध्ययन

डॉ. मनोज कुमार शर्मा
प्राचार्य, महात्मा गाँधी टीचर्स ट्रेनिं ग कॉलेज, महवा, दौसा (राज.)

सारांश

राजस्थान राज्य के जयपुर जिले में स्थित विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की कार्यशैली' का अध्यापन अनुभव के आधार पर विश्लेषण एवं वर्णन करने के लिए सर्वेक्षण किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण से ज्ञात हुआ है कि अध्यापकों की उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त और दृश्य उन्मुख बनाम श्रव्य उन्मुख कार्यशैली के प्रति वरीयताएँ उनके अध्यापन अनुभव से स्वतंत्र हैं तथा विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, क्षेत्र स्वतन्त्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित, वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष तथा वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक कार्यशैली के प्रति वरीयताएँ उनके अध्यापन अनुभव से स्वतंत्र नहीं हैं।

प्रयुक्त शब्दावली: विद्यालयीन अध्यापक, कार्यशैली, अध्यापन अनुभव, सर्वेक्षण अध्ययन, काई वर्ग परीक्षण.

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की सफलता बहुत हद तक अध्यापकों पर निर्भर करती है इसलिए अध्यापकीय विशिष्टताओं को समझने के प्रति अध्येताओं का रुझान रहा है ताकि इन विशिष्टताओं के सापेक्ष प्रभावी कार्यनीति बनायी जा सके। इस क्रम में अध्यापन अनुभव के साथ अध्यापकीय विशिष्टताओं के सम्बन्ध को जानने और इन संबंधों की विशेष चरों के सापेक्ष व्याख्या करने के लिए देश विदेश में अनेक अध्ययन हुए हैं। इन अध्ययनों में रेड्डी (1988) ने अध्यापकों की किसी क्षेत्र में अनुभूत कार्य जरूरतों का अध्यापन अनुभव के आधार पर अध्ययन किया और क्षेत्र में अनुभूत कार्य जरूरतों के प्रति अध्यापकों के दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर नहीं पाया। श्रीनिवासन (1992) ने प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के व्यक्तित्व लक्षण एवं उनकी अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति के अध्ययन में पाया कि अध्यापन अनुभव अध्यापकों की अभिवृत्ति को सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है।

अध्यापक कुशलता और विद्यालयीन प्रभावशीलता के अध्ययन में रामा (1997) ने पाया कि अधिक अध्यापन अनुभव वाले अध्यापक कम अनुभव रखने वाले अध्यापकों की तुलना में ज्यादा बर्न आउट महसूस करते हैं। येह (2007) ने कम्प्यूटर

अनुवर्ग के अध्यापन अनुभव के दौरान पूर्व सेवारत अध्यापकों के चार वैयक्तिक गुणों- कम्प्यूटर तकनीकी प्रबन्ध, चिन्तन शैलियों, कम्प्यूटर तकनीकी कौशल एवं अंतर्वैयक्तिक बुद्धिमता तथा उपचार आकल्पों के बीच अन्तः क्रिया से सम्बन्धित अध्ययन से निष्कर्ष निकाला कि उच्च कम्प्यूटर तकनीकी प्रबन्ध, कौशल एवं अन्तर्वैयक्तिक बुद्धिमता वाले तथा न्यायिक चिन्तन शैली वाले अध्यापकों की मस्तिष्क वरीयताएँ विश्लेषणात्मक हैं और इनका अध्यापन अभ्यास अधिक प्रतिबिम्बात्मक है। अध्यापन अनुभव के सम्बन्ध में रेड्डी (1990) ने भी अध्यापकों के अध्यापन व्यवहार में सार्थक अन्तर पाया। अग्रवाल (1991) ने अध्यापकों की सामाजिक स्थिति सम्बन्धी चरों और मूल्यों के सन्दर्भ में कार्य सन्तुष्टि के अपने अध्ययन निष्कर्ष में पाया कि ज्यादा अनुभवी अध्यापक अपने कार्यों से अधिक सन्तुष्ट होते हैं। मित्तल (1992) ने अध्यापकों की कार्य अभिप्रेरणा पर अपने अन्वेषणात्मक अध्ययन के निष्कर्ष में 10 वर्ष से कम अनुभवी अध्यापकों में तुलनात्मक रूप से कार्य अभिप्रेरणा की अधिकता पायी।

इस प्रकार अध्यापन अनुभव के सन्दर्भ में अध्यापकीय विशिष्टताओं को जानने के क्रम में रेड्डी (1988) और श्रीनिवासन (1992) के अध्ययनों में अध्यापन अनुभव अध्यापक विशिष्टता का सार्थक रूप से प्रभावी कारक नहीं पाया गया, जबकि रेड्डी (1990), अग्रवाल (1991), मित्तल (1992), रामा (1997) एवं येह (2007) के अध्ययनों में अध्यापन अनुभव अध्यापकीय विशिष्टताओं का प्रभावी कारक है। मिश्रा (2003) के अनुसार अध्यापक द्वारा विभिन्न मानसिक, शारीरिक, सामाजिक, वातावरणीय, व्यावसायिक अभिवृत्ति एवं संवेदी तत्वों के प्रति दी जाने वाली वरीयताओं का योग उसकी कार्यशैली की अभिव्यंजना करता है। कार्यशैली से सम्बंधित अध्ययनों में शर्मा (2008) ने विभिन्न वैयक्तिक कारकों के सन्दर्भ में अध्यापकों की कार्यशैली का अध्ययन किया। शर्मा (2018) ने अध्यापकों की शैक्षिक योग्यता के सन्दर्भ में उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त कार्यशैली के अतिरिक्त सभी तथा शर्मा (2018अ) ने पद स्थिति के सन्दर्भ में नमनीय बनाम अनमनीय एवं अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित कार्य-शैली के प्रति वरीयताओं के अतिरिक्त सभी कार्यशैलियों पर दी गयी वरीयताओं में साहचर्य पाया। जब अध्यापकों की शैक्षिक योग्यता और पद स्थिति उनकी कार्यशैली को प्रभावित करते हैं तब यह संभव है कि अध्यापकों की कार्यशैली वरीयताओं के विनिश्चियन में अध्यापन अनुभव की भूमिका हो। ऐसे में क्या अध्यापन अनुभव अध्यापकों की कार्यशैली वरीयताओं के विनिश्चियन में सम्बद्ध है? इस प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिए विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की कार्यशैली का अध्यापन अनुभव के आधार पर अध्ययन किया गया।

अध्ययन उद्देश्य

विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की कार्यशैलियों का अध्यापन अनुभव के आधार पर अध्ययन करना।

शोध अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्यानुसार स्वतन्त्र चर 'अध्यापन अनुभव' के आधार पर आश्रित चर 'अध्यापकों की कार्यशैली' की व्याख्या हेतु सर्वेक्षण अध्ययन की वर्णनात्मक विधि का उपयोग किया गया है।

न्यादर्शन और न्यादर्श

राजस्थान राज्य के जयपुर जिले में स्थित प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों में से 'स्तरीकृत यादृच्छिक गैर आनुपातिक सोद्देश्य गुच्छ न्यादर्शन विधि' कुल 785 अध्यापकों का चयन किया गया। न्यादर्श को अध्यापन अनुभव के आधार पर चार वर्गों में वर्गीकृत करने पर 0 से 5 वर्ष अनुभव वाले 141, 5 से 10 वर्ष अनुभव वाले 212, 10 से 15 वर्ष अनुभव वाले 259 तथा 15 से अधिक वर्ष अनुभव वाले 173 अध्यापकों को 'अध्यापन अनुभव' के आधार पर अंतिम न्यादर्श में शामिल किया गया।

शोध उपकरण

अध्यापकों की वैयक्तिक विशिष्टता से संबध चर 'अध्यापन अनुभव' की जानकारी प्राप्त करने के लिए शोधकर्ता ने 'वैयक्तिक सूचना प्रपत्र' निर्मित किया तथा अध्यापकों की कार्यशैली वरीयताओं का मापन करने के लिए उपकरण उपलब्ध नहीं होने के कारण 'अध्यापक कार्यशैली सूची' का विकास तथा मानकीकरण किया।

प्रदत्तों की प्रकृति तथा सांख्यिकीय प्रविधियाँ

इस शोध अध्ययन में संकलित प्रदत्तों की प्रकृति मात्रात्मक थी। जिनमें से 'अध्यापन अनुभव' के आधार प्राप्त प्रदत्त आवृत्तियों में तथा अध्यापकों की कार्यशैली सूची की सहायता से संकलित प्रदत्त वरीयताओं के रूप में प्राप्त हुए। अध्यापन अनुभव के सन्दर्भ में अध्यापकों की कार्यशैलियों का अध्ययन करने के लिए कार्यशैली के प्रति प्रदर्शित अध्यापकों की वरीयताओं का विश्लेषण करने के पश्चात् 4×2 की तालिकाएँ निर्मित कर काई वर्ग परीक्षण का अनुप्रयोग किया गया।

शोध निष्कर्ष

संकलित प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर अग्रांकित निष्कर्ष प्राप्त हुए:

1. अध्यापकों की उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त तथा दृश्य उन्मुख बनाम श्रव्य उन्मुख कार्यशैली के प्रति वरीयताएँ उनके अध्यापन अनुभव से स्वतंत्र पायी गयी हैं। अर्थात् 0 से 5 वर्ष, 5 से 10 वर्ष, 10 से 15 वर्ष एवं 15 से अधिक वर्ष के अध्यापन अनुभव वाले अध्यापकों की उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त तथा दृश्य उन्मुख बनाम श्रव्य उन्मुख कार्यशैली पर दी गयी वरीयताओं में भिन्नता नहीं होती है।
2. अध्यापकों द्वारा विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, क्षेत्र स्वतन्त्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित, वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष तथा वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक कार्यशैली के प्रति दी गयी वरीयताएँ उनके अध्यापन अनुभव से स्वतंत्र नहीं हैं। अर्थात् 0 से 5 वर्ष, 5 से 10 वर्ष, 10 से 15 वर्ष एवं 15 से अधिक वर्ष के अध्यापन अनुभव होने के आधार पर अध्यापकों की विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, क्षेत्र स्वतन्त्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित, वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष तथा वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक कार्यशैली पर दी गयी वरीयताओं में भिन्नता होती है।

शैक्षिक निहितार्थ

अध्यापन अनुभव (0 से 5 वर्ष, 5 से 10 वर्ष, 10 से 15 वर्ष एवं 15 से अधिक वर्ष) के आधार अध्यापक किस प्रकार कार्य करने को वरीयता देते हैं, यह शैक्षिक नियोजकों, अध्यापक शिक्षकों, संस्था प्रधानों यहाँ तक कि स्वयं शिक्षकों के लिए निहितार्थ भी रखता है। प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर इस अध्ययन के निम्नलिखित निहितार्थ हो सकते हैं -

1. अध्यापकों ने उत्तरदायित्व मुक्त कार्यशैली की तुलना में उत्तरदायित्व पूर्ण कार्यशैली को अधिक वरीयता देना इनकी उत्तरदायित्व को अपने आप स्वीकार करने की वृत्ति और कार्य-निष्ठा की पुष्टि करता है। इसलिए शैक्षिक नियोजक, प्रबन्धक/प्रशासक अध्यापकों की कार्यशैली विशिष्टताओं को ध्यान में रखते हुए परिवीक्षण में लगने वाले समय व श्रम को अन्य उत्पादक कार्यों में लगा सकते हैं। सेवापूर्व व सेवारत अध्यापक शिक्षा के निकाय अध्यापकों में और उत्तरदायित्व की भावना विकसित करने का प्रयास कर सकते हैं। अध्यापकों ने दृश्यात्मक कार्यशैली को श्रवणात्मक कार्यशैली से अधिक वरीयता दी है। यह निष्कर्ष सुझाता है कि अध्यापक दृश्यात्मक स्वरूप की सूचनाओं एवं स्थितियों का बेहतर उपयोग कर पाते हैं। अतः इन अध्यापकों से बेहतर कार्य करवाने के लिए कार्य स्थिति में लिखित सामग्री या अन्य दृश्यात्मक स्थितियों के साथ अन्तः क्रिया करने का अधिक से अधिक अवसर दिया जाना चाहिए। अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अद्यतन दृश्यात्मक साधनों का और अधिक उपयोग करने का प्रयास किया जा सकता है।
2. अध्यापकों द्वारा विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, क्षेत्र स्वतन्त्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित, वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष तथा वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक कार्यशैली के प्रति दी गयी वरीयताएँ उनके अध्यापन अनुभव से स्वतंत्र नहीं हैं। अत: उक्त कार्यशैलियों से अध्यापकों में पाए जानी विशिष्टताओं को ध्यान में रखते हुए पर्याप्त कार्य-अवसर दिए जा सकते है, साथ ही शैली के ध्रुव विशेष पर दी गयी वरीयताओं को देखते हुए सुमेलनकारी कार्य नियोजन कर सकते हैं। जो अध्यापक कार्य स्थिति की संरचना से प्रभावित नहीं होकर अपने अनुसार कार्य करते हैं तथा प्रासंगिक विवरणों/सूचनाओं पर ध्यान केन्द्रित करने में सक्षम होते हैं उन्हें अपेक्षाकृत जटिल कार्य समस्याओं को हल करने के लिए प्रेरित किया सकता है। अध्यापकों के लिए कार्य परिवेश में उन उपागमों को शामिल किया जा सकता है जिनमें अध्यापकों की अधिक सक्रिय सहभागिता हो।
3. अधिक अध्यापन अनुभव रखने वाले अध्यापकों के कार्य/समस्या देते समय इनकी इच्छा का ध्यान रखा जाना चाहिए। इन अध्यापकों को विविध प्रकार से कार्य लक्ष्य प्राप्त करने के लिए इनकी विशिष्टता को समझते हुए आवश्यक सहायता देनी चाहिए। कार्यों को स्वेच्छा से आरम्भ करने, चुनौतिपूर्ण समस्याओं का सामना करने एवं समस्या समाधान खोजने जैसी गतिविधियों की आवृत्ति बढ़ाते हुए इनकी स्व प्रेरणा का उच्चतम उपयोग लिया जा सकता है। अध्यापकों की वातावरण के प्रति संवेदनशीलता शैक्षिक उत्पादकता के लिए लाभदायी हो सकती है, इसलिए इसके विकास हेतु कार्य के प्रति रूचि जागृत करने के अवसरों में नियमितता लायी जानी चाहिए। 0 से 5 वर्ष तक का अध्यापन अनुभव रखने वाले अध्यापक वातावरण निरपेक्ष कार्यशैली को अधिक वरीयता देते हैं अतः इन अध्यापकों में नियमित कार्य आदतों का विकास करने के क्रम में इन्हें वातावरण सापेक्ष बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए। व्यक्तिगत कार्य लक्ष्य देते हुए इन अध्यापकों की कार्यक्षमता का बेहतर उपयोग किया जा सकता है। लक्ष्यों की प्राप्ति में समूह के योगदान की सराहना एवं समूह में सम्मिलित व्यक्तियों की पहचान को समूह से जोड़ते हुए समूह में कार्य करने का अवसर देने के साथ ही साथ

वैयक्तिक रूप से दायित्व सौंपते हुए और अधिक आत्मविश्वास विकसित किया जा सकता है। शिक्षाशास्त्री, मनोवैज्ञानिक, शिक्षा व्यवस्था से जुड़े प्रबन्धक/प्रशासक एवं स्वयं अध्यापक नवीन कार्य पद्धतियों, युक्तियों, कार्य प्रविधियों एवं उपागमों को अपनाते हुए सुझाते हुए अनुकूल कार्य वातावरण का विकास कर सकते हैं।

सन्दर्भ सूची

- मितल, जयप्रकाश (1992). एन एक्सप्लोरेटरी स्टडी ऑफ टीचर्स' मोटिवेशन टू वर्क एण्ड सम फेक्टर्स एसोशियेटेड विद हाई एण्ड लॉ वर्क मोटिवेशन ऑफ टीचर्स, अनपब्लिश्ड पीएच.डी. थीसिस इन एज्यूकेशन, मेरठ: मेरठ यूनिवर्सिटी.
- मिश्रा, मुरलीधर (2003). अध्यापकों की कार्यशैलियों का अध्ययन, स्वतन्त्र अध्ययन, वनस्थली विद्यापीठ.
- मीनाक्षी, अग्रवाल (1991). जॉब सेटिशफेक्शन ऑफ टीचर्स इन रिलेशन टू सम डेमोग्राफिक वेरियबल्स एण्ड वेल्यूज, अनपब्लिश्ड पीएच.डी. थीसिस इन एज्यूकेशन, आगरा: आगरा यूनिवर्सिटी.
- येह, यु-चु (2007), एप्टीट्यूड-ट्रीटमैंट इन्टरएक्शन्स इन प्री-सर्विस टीचर्स विहेवियर चेंज डयूरिंग कम्प्यूटर सिमुलेटेड टीचिं ग, कम्प्यूटर एण्ड एज्यूकेशन, 48 (3), 495-507.
- रामा, आर,. (1997). अ स्टडी ऑफ दी इम्पेक्ट ऑफ बर्न आउट ऑन टीचर इफीशियेन्सी एण्ड स्कूल इफेक्टिवनेस, रिसर्च रिपोर्ट, नई दिल्ली: एन.सी.ई.आर.टी.
- रेड्डी, जी. मदनमोहन (1988). परफोरमेन्स रिक्वायरमेण्ट्स ऑफ वर्कर टीचर्स एज परसिव्ड बाय द वर्कर- टीचर्स ऑफ एज्यूकेशन सेन्टर्स, अनपब्लिश्ड एम.फिल. थीसिस इन एज्यूकेशन, गजरोला: श्री वेंकटेश्वर यूनिवर्सिटी.
- रेड्डी, बी. रामचन्द्र (1990). टीचिं ग बिहेवियर ऑफ हाइस्कूल टीचर्स इन रिलेशन टू सर्टेन फेक्टर्स, अनपब्लिश्ड थीसिस पीएच.डी. इन एज्यूकेशन, गजरोला: श्री वेंकटेश्वर यूनिवर्सिटी.
- वियरस्मा, विलियम (1986). रिसर्च मैथड्स इन एज्यूकेशन: एन इन्ट्रोडक्शन, बोस्टन, सी ए: एलन एण्ड बैकन.
- वियरा, ए. एण्ड पोलॉक जे. (1992). रीडिंग एज्यूकेशनल रिसर्च, स्कोट्सडेल, ए जेड: गोरसच स्केरिस्ब्रिक पब्लिशर्स.
- शर्मा, मनोज कुमार (2008). विभिन्न वैयक्तिक कारकों के सन्दर्भ में अध्यापकों की कार्य शैली का अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र, जयपुर: राजस्थान विश्वविद्यालय.
- शर्मा, मनोज कुमार (2018). शैक्षिक योग्यता के सन्दर्भ में विद्यालयीन अध्यापकों की कार्यशैली का अध्ययन, चेतना: इंटरनेशनल एजुकेशनल जर्नल, 3 (1), अप्रैल, 251-254.
- शर्मा, मनोज कुमार (2018अ). अध्यापकों की कार्य-शैलियों का पद स्थिति के सन्दर्भ में अध्ययन, चेतना: इंटरनेशनल एजुकेशनल जर्नल, 3 (स्पे-2), अप्रैल 2018, 96-99.
- श्रीनिवासन, वी. (1992), पर्सनेल्टी ट्रेट्स ऑफ प्राइमरी स्कूल टीचर्स एण्ड देअर एटीट्यूड टूवर्डस टीचिं ग. अनपब्लिश्ड एम.फिल. थीसिस इन एज्यूकेशन, चिदम्बरम: अन्नामलाई यूनिवर्सिटी.